

p

2795

ಪಾಗರೂಪಕಯಿಂದ ಬಳಸಿ

ಪಟ್ಟಿಪಾಠ ಸಂಖ್ಯೆ.....
P-2795

4046
J. 19
2600

THE NEW
SANSKRIT PRIMER
(with nice wood-cuts)
PART I.

गीर्वाणभाषोद्यानप्रवेशिकानाम
चित्र संस्कृत बालशिक्षा



1899.

Price 2½ annas.

SRI CHAMARAJENDRA SANSKRIT COLLEGE LIBRARY
BANGALORE
Accn. No. 2600

1. The maximum time allowed for retention of a book shall be one fortnight. It may be borrowed again if not required by others.

2. No reference books shall be lent out.

3. No borrower shall have more than two volumes out of the Library at one time.

4. Borrowers must not pass books from one to another but must return them to the Librarian.

5. Library books must not be used as class-books.

6. Any one who defaces by writing or otherwise damages any book shall pay the full cost of the book or of the entire works, if it consists of more than one volume.

7. The borrower shall be responsible for the value of the books lent out to him if they are lost, damaged or otherwise cannot be returned to the Library when they are due or recalled.

8. The presence of the voucher with the Librarian shall be considered sufficient proof of the non-return of books.

Class and No. 7.81.256

THE NEW
SANSKRIT PRIMER.

(with nice wood-cuts)

PART I.

Containing Kanarese, Telugu & English alphabet equivalent to Devanagari alphabet

AND
advisory lessons with other necessary information.

गीर्वाणभाषोद्यानप्रवेशिकानाम
सचित्र संस्कृत बालशिक्षा ।
[प्रथमो भागः]

Printed and published by

ABAJI RAMCHANDRA SAVANT.

Proprietor the " Ramtatva-Prakash Press "

BELGAUM.

1899.

Price 2½ Annas.

All rights reserved by the Publisher.

विज्ञप्तिः ।

श्लोक (शार्दूलविक्रीडित.)

नास्तन्या जनचित्तमोहनकरी गीर्वाण भाषा समा
वर्तन्ते खलु यत्र सर्वमुखदा विद्याश्च नानाविधाः ।
यां वै संप्रति ते भजन्ति च परद्वीपस्थ लोकास्त्वहो
तामार्या वयमद्य मातुरधिकं किं नो नु सेवामहै ॥ १ ॥

(अनुष्टुप्)

मुदैवेनांग्लसत्तायां प्रसारोऽत्र महानभूत् ॥
अस्याः संस्कृत भाषाया जीर्णतां या गता पुरा ॥ २ ॥
' बालशिक्षा ' पुस्तकेऽस्मिन्नपूर्वक्रमपूर्वकम् ॥
यत्नतो निहिताः पाठा ज्ञानवृद्धिकराः खलु ॥ ३ ॥
व्यावहारिक विज्ञानं तूर्णं वर्धिष्यते यया ॥
भाषाज्ञानं च बालानां रीतिः सैवावलंबिता ॥ ४ ॥
इच्छूनां परिचेतुं च देवभाषां सुमंगलां ॥
हंसक्षीराख्य न्यायेन तुष्टिं प्राप्नोतु सर्वदा ॥ ५ ॥

THE NEW SANSKRIT PRIMER.

(with nice wood-cuts).

PART I.

T-256
2600

Containing Kanarese, Telugu &
English alphabet equivalent
to Devanagari alphabet

AND
advisory lessons with other necessary
information.

गीर्वाणभाषाध्यानप्रवेशिका नाम
सचित्र संस्कृत बालशिक्षा ।
[प्रथमो भागः]

Printed and published by
ABAJI RAMCHANDRA SAVANT.
Proprietor the " Ramtatva-Prakash Press "
BELGAUM.

1899.

Price 2½ Annas.

All rights reserved by the Publisher.

विज्ञप्तिः ।

श्लोक (शार्दूलविक्रीडित.)

नास्तन्या जनचित्तमोहनकरी गीर्वाण भाषा समा
वर्तन्ते खलु यत्र सर्वमुखदा विद्याश्च नानाविधाः ।
यां वै संप्रति ते भजन्ति च परद्वीपस्थ लोकास्त्वहो
तामार्या वयमद्य मातुराधिकं किं नो नु सेवामहै ॥ १ ॥

(अनुष्टुप्)

मुदैवेनांगलसत्तायां प्रसारोऽत्र महानभूत् ॥
अस्याः संस्कृत भाषाया जीर्णतां या गता पुरा ॥ २ ॥
' बालशिक्षा ' पुस्तकेऽस्मिन्नपूर्वक्रमपूर्वकम् ॥
यत्नतो निहिताः पाठा ज्ञानवृद्धिकराः खलु ॥ ३ ॥
व्यावहारिक विज्ञानं तूर्णं वर्धिष्यते यया ॥
भाषाज्ञानं च बालानां रीतिः सैवावलंबिता ॥ ४ ॥
इच्छूनां परिचेतुं च देवभाषां सुमंगलां ॥
हंसक्षीराख्य न्यायेन तुष्टिं प्राप्नोतु सर्वदा ॥ ५ ॥

अनन्तः

आदित्यः

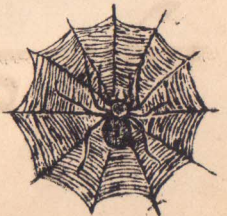
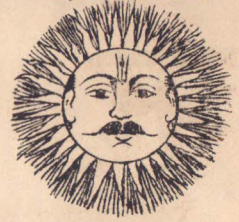
इन्दुः

ईश्वरः

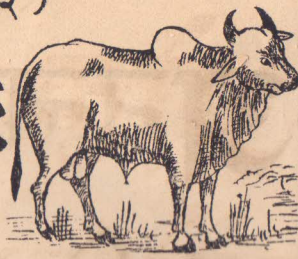
उन्दुरः

ऊर्णनाभः

(१)



ऋषभः



ऋ

ऋ

लृ

लृ

लृ

लृ

एणः



ऐरावतः



ओतुः



औदुंबरः



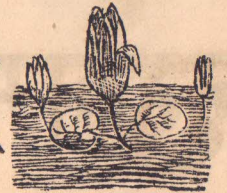
अंकुशः



अः

अः

कमलम्



खड्गः



गजाननः



घण्टा



ङ



चक्रम्



छत्रम्



जरठः



झषः



ञ



टट्टनी



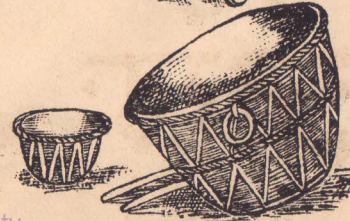
ठक्करः



डमरुः

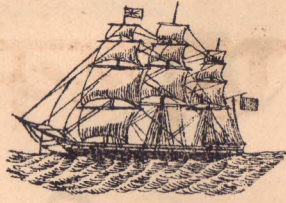


ढक्का



ण ण

तरणिः



थ थ

दत्तात्रेयः



धनुः



नक्रः



पट्टिशः



फलकः



बटुः



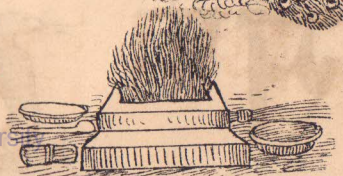
भल्लूकः



मयूरः



यज्ञः



(८)

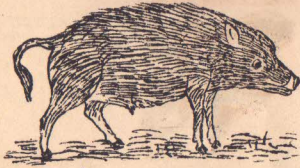
रथः



लक्ष्मीः



वराहः



शशः



षडाननः



सर्पः



(९)

हनूमान्



क्षत्रियः



ज्ञ

ज्ञ

बालबोध.	कन्नड.	तेलुगु.	इंग्लिश.
अ	ಅ	అ	a
आ	ಆ	ఆ	ā
इ	ಇ	ఇ	i
उ	ಉ	ఉ	î
ऊ	ಊ	ఊ	u
	ಋ	ఱ	û

*p
ph
b
bh
m
y
r
l
v
ś
sh
s
h
l
ksh
jñ*



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमःसिद्धं ॥

स्वराः ।

अ आ इ ई
उ ऊ ऋ ॠ
ऌ ए ऐ ओ
औ अं अः

व्यञ्जनानि ।

क ख ग घ ङ
 च छ ज झ ञ
 ट ठ ड ढ ण
 त थ द ध न
 प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

ळ क्ष ज्ञ.

० ०० ००० ०००० ०००००
 १ २ ३ ४ ५
 ०००००० ००००००० ००००००००
 ६ ७ ८
 ०००००००००० ००००००००००
 ९ १०

अज	इभ	ऋण	एक
ऐण	कर	खग	गज
घट	चल	छल	जप
झष	डह	तट	शठ
रथ	दक्ष	धन	रण
फल	बल	भर	मठ
यज्ञ	पट	नद	ईश
ईक्षण	उपल	ऊषण	
ओदन	औषध	अंसल	
आढक	जनक	तक्षक	
चपल	पणव	जठर	
हलधर	आचमन	उपवन	

ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण

ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण
 ण ण ण ण ण ण ण ण

मं मं नं नं णं णं शं षं
 मं मं नं नं णं णं शं षं
 मी मी नी नी णी णी शी षी
 मी मी नी नी णी णी शी षी
 मे मे नं नं णं णं शं षं
 मे मे नं नं णं णं शं षं
 मु मु नु नु णु णु शु षु
 मु मु नु नु णु णु शु षु
 मी मी नी नी णी णी शी षी
 मि मि नि नि णि णि शि षि
 मा मा या या णा णा शा षा
 म म य य ण य य श ष

मं णं णं णं णं
 मं णं णं णं णं १०, ० १०,
 मी णी णी णी णी ९ ९ ९,
 मी णी णी णी णी ८ ८ ८,
 मे णं णं णं णं ७ ७ ७,
 मे णं णं णं णं ६ ६ ६,
 मु णु णु णु णु ५ ५ ५,
 मु णु णु णु णु ४ ४ ४,
 मी णी णी णी णी ३ ३ ३,
 मि णि णि णि णि २ २ २,
 मा णा णा णा णा १, ० १,
 म ण य य ण य

गंगा तापः जंघा दंडी
 पांसु वामा तैलं वैरं
 छंदः रामः डिंभः वीणा
 इंदिरा आकाशः उशीरं
 कालिंगः केतकी गौतमी
 पांचाली तितिक्षा तुरंगः
 पानीयं भावना माकंदः
 मुकुंदः गोविंदः अशोकः
 वासंती शोभनः संसारः
 हेमंतः सुधांशुः सौरभः
 सुमेधाः सैधवी वैखरी
 औदुंबरः कादंबिनी धारांकुरः
 यजमानः यावनालः राजहंसः
 अभितपाः दिवौकसः चंपावती

संयुक्त व्यञ्जनानि ।

क्क(क्+क) कख(क्ख) कच(क्च)
 क्त(क्त) कथ(क्थ) क्क, कन(क्न)
 कम(क्म) कय(क्य) क्क, क्क(क्क)
 क्लकल(क्ल)क्क(क्व) क्ष(क्ष)
 ख्र(ख्न) ख्य(ख्य) ख्र(ख्र)
 ख्व(ख्व) गग(गग) गघ(गघ)
 गज(गज) गण(गण) गद्(गद्)
 गध(गध) ग्र(ग्र) गव(गव)
 गभ(गभ) गम(गम) गय(गय)
 ग्र(ग्र) ग्ल(ग्ल) ग्व(ग्व)
 घ्न(घ्न) घ्य(घ्य) घ्र(घ्र)
 घ्व(घ्व) झ्क(झ्क) झ्घ(झ्घ)
 झ्म(झ्म) झ्न(झ्न) च्च(च्च)
 च्छ(च्च) च्म(च्म) च्य(च्य)

अ(अ)	अव(अव)	अय(अय)
इ(इ)	ज(ज)	जम(जम)
ज(ज)	ज्य(ज्य)	ज्व(ज्व)
इय(इय)	अ(अ)	क(क)
ट(ट)	ट्य(ट्य)	ट्र(ट्र)
ट्व(ट्व)	ट्य(ट्य)	ट्र(ट्र)
ड(ड)	डु(डु)	ड्य(ड्य)
ड्र(ड्र)	ड्व(ड्व)	ड्य(ड्य)
ड्र(ड्र)	ड्व(ड्व)	ण्ट(ण्ट)
ण्ट(ण्ट)	णण(णण)	णम(णम)
ण्य(ण्य)	णव(णव)	णह(णह)
त्क(त्क)	त्ख(त्ख)	त्त(त्त)
त्थ(त्थ)	त्न(त्न)	त्प(त्प)
त्फ(त्फ)	त्म(त्म)	त्य(त्य)
त्र, त्र(त्र)	त्व(त्व)	त्स(त्स)
त्क्ष(त्क्ष)	जज्ञ(त[ज]ज्ञ)	थन(थन)

थम(थम)	थ्य(थ्य)	थ्र(थ्र)
द(द)	द्व(द्व)	द्व(द्व)
द्व(द्व)	द्व(द्व)	द्व(द्व)
द्व(द्व)	द्व(द्व)	द्व(द्व)
द्व(द्व)	द्व(द्व)	द्व(द्व)
द्व(द्व)	द्व(द्व)	द्व(द्व)
धम(धम)	ध्य(ध्य)	ध्र(ध्र)
धव(धव)	नक(नक)	न्त(न्त)
न्य(न्य)	न्द(न्द)	न्ध(न्ध)
न्न(न्न)	नप(नप)	न्म(न्म)
न्य(न्य)	न्न(न्न)	न्व(न्व)
न्ह(न्ह)	प्र(प्र)	प्त(प्त)
प्प(प्प)	प्म(प्म)	प्य(प्य)
प्र(प्र)	पु, प्ल(पु, प्ल)	प्व(प्व)
प्स(प्स)	फय(फय)	फ्र(फ्र)
फ्र(फ्र)	व्य(व्य)	व्य(व्य)
व्य(व्य)	व्य(व्य)	व्य(व्य)

ब्ध(ब्ध)	ब्र(ब्रन्)	ब्ब(ब्ब)
ब्र(ब्र)	ब्ल(ब्ल)	ब्ज(ब्ज)
भ्र(भ्रन्)	भ्य(भ्य)	भ्र(भ्र)
भ्व(भ्व)	म्न(म्न)	म्प(म्प)
म्फ(म्फ)	म्ब(म्ब)	म्भ(म्भ)
म्म(म्म)	म्य(म्य)	म्र(म्र)
म्ल(म्ल)	मण(मण)	य्य(य्य)
य्व(य्व)	र्क(र्क)	र्च(र्च)
र्ण(र्ण)	र्त(र्त)	र्म(र्म)
र्(र्)	र्ह(र्ह)	र्ह(र्ह)
ल्क(ल्क)	लग(लग)	श्र(श्रन्)
ल्प(ल्प)	लब(लब)	लम(लम)
ल्य(ल्य)	ल्ल(ल्ल)	लव(लव)
लह(लह)	न्न(न्न)	व्य(व्य)
व्र(व्र)	व्व(व्व)	श्च(श्च)
श्म(श्म)	श्य(श्य)	श्र(श्र)

श्ल(श्ल)	श्व(श्व)	श्श(श्श)
ष्क(ष्क)	ष्ट(ष्ट)	ष्ठ(ष्ठ)
ष्ण(ष्ण)	ष्प(ष्प)	ष्म(ष्म)
ष्य(ष्य)	ष्व(ष्व)	स्क(स्क)
स्व(स्व)	स्त(स्त)	स्थ(स्थ)
स्न(स्न)	स्प(स्प)	स्फ(स्फ)
स्म(स्म)	स्य(स्य)	स्र(स्र)
स्ल(स्ल)	स्स(स्स)	ह्र(ह्रन्)
ह्र(ह्रण)	ह्र(ह्रम)	ह्र(ह्रय)
ह्र(ह्र)	ह्र(ह्रव)	ह्र(ह्रळ)
ळ्व(ळ्व)	ळ्ळ(ळ्ळ)	क्ष्ण(क्ष्ण)
क्ष्म(क्ष्म)	क्ष्य(क्ष्य)	क्ष्व(क्ष्व)
क्त्र(क्त्र)	ग्र्य(ग्र्य)	च्छ्र(च्छ्रव)
च्छ्र(च्छ्र)	र्तम(र्तम)	र्त्य(र्त्य)
र्ण्य(र्ण्य)	त्प्र(त्प्र)	त्र्य(त्र्य)
त्र(त्र)	त्स्र(त्स्र)	त्स्य(त्स्य)

द्व(द्वर) द्य(द्वय) द्व(द्वर)
 द्य(द्वय) ध्व(ध्वय) प्त्य(प्त्य)
 षक्र(षक्र) ष्ट्य(ष्ट्य) ष्ट्र(ष्ट्र)
 ष्व(ष्व) ष्य(ष्य) षप्र(षप्र)
 स्पृ(स्पृ) स्प(स्प) त्म्य(त्म्य)
 द्य(द्वय) द्व(द्व) स्त्र(स्त्र)
 क्त(क्त) गध्र(गध्र) गध्व(गध्व)
 च्य(च्य) ण्य(ण्य) न्द्र(न्द्र)
 र्य(र्य) न्त्य(न्त्य) ध्व्य(ध्व्य)
 म्प्र(म्प्र) म्प्य(म्प्य) श्र(श्र)
 रुय(रुय) ह्य(ह्य) व्ह्य(व्ह्य)
 त्रय(त्रय) पत्र(पत्र) ड्क्ष्व(ड्क्ष्व)
 ह्य(ह्य) स्म्य(स्म्य) क्ष्म्य(क्ष्म्य)
 च्म्य(च्म्य) श्र्य(श्र्य)
 ण्य(ण्य) ल्म्य(ल्म्य)
 ड्गध्व(ड्गध्व) त्स्न्य(त्स्न्य)

द्व द्व द्व द्व द्व द्व
 द्य द्य द्य द्य द्य द्य
 षक्र षक्र षक्र षक्र षक्र षक्र
 ष्व ष्व ष्व ष्व ष्व ष्व
 स्पृ स्पृ स्पृ स्पृ स्पृ स्पृ
 द्य द्य द्य द्य द्य द्य
 क्त क्त क्त क्त क्त क्त
 च्य च्य च्य च्य च्य च्य
 र्य र्य र्य र्य र्य र्य
 म्प्र म्प्र म्प्र म्प्र म्प्र म्प्र
 रुय रुय रुय रुय रुय रुय
 त्रय त्रय त्रय त्रय त्रय त्रय
 ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य
 च्म्य च्म्य च्म्य च्म्य च्म्य च्म्य
 ण्य ण्य ण्य ण्य ण्य ण्य
 ड्गध्व ड्गध्व ड्गध्व ड्गध्व ड्गध्व ड्गध्व

ऋकारयुक्तव्यञ्जनानि ।

कृ(क्ऋ) चृ(चऋ) छृ(छऋ) तृ(तऋ)
 टृ(टऋ) नृ(नृऋ) पृ(पृऋ) बृ(बृऋ)
 मृ(मृऋ) वृ(वृऋ) शृ(शृऋ) हृ(हृऋ)

कृष्णा तृष्णा दृष्टिः वृष्टिः
 नृपालः शृगालः मृणालः
 पृथ्वीका बृहस्पतिः हृष्टरोमा
 शब्दपाठः

चक्र	तक्र	नक्र	वक्र
अत्र	तत्र	छत्र	सत्र
खण्ड	चण्ड	दण्ड	मण्ड
ऊर्ण	कर्ण	पर्ण	वर्ण
कर्म	धर्म	मर्म	वर्म
कुष्ट	दुष्ट	पुष्ट	सुष्ट
प्रेष्ठः	श्रेष्ठः	ज्येष्ठः	स्फेष्ठः
वृधोक्षः	सन्नद्धः	प्रल्हन्नः	पद्माक्षी



॥ श्लोकाः ॥

गजाननं भूतगणाधिसेवितं
 कपित्थ जंबू फल सार भक्षितं
 उमासुतं शोकविनाशकारणं
 नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥ १ ॥

नमस्ते शारदा देवि काश्मीरपुरवासिनी
 त्वामहं प्रार्थये देवि विद्यादानं च देहिमे ॥ २ ॥
 पाशांकुशधरा देवि वीणापुस्तकधारिणि
 मम वक्त्रे वसेर्नित्यं दुग्धकुंद सुनिर्मले ॥ ३ ॥
 सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि
 विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ४
 गणनाथसरस्वतीरविशुक्रबृहस्पतीन्
 पंचैतान्संस्मरेन्नित्यं वेदवाणी प्रवर्तते ॥ ५ ॥

प्रथमः पाठः ॥ १ ॥

(शब्दाः)

श्रीः	धीः	हीः	गीः
गौः	नौः	भूः	भाः
अन्नं	जलं	दुग्धं	दधि
मधु	घृतं	तक्रं	तैलं
सत्यं	पुण्यं	धर्मः	गुरुः
शब्दः	हितं	गेहं	वैरं
पत्रं	वेदः	देवं	व्रतं
भुङ्क्व	वद	भज	विश
कुरु	चर	त्यज	लिख
पठ	ब्रूहि	पिब	शृणु

(वाक्यानि)

सत्यं वद ।	अन्नं भुङ्क्व ।	जलं पिब ।
पुण्यं कुरु ।	धर्मं चर ।	वैरं त्यज ।
गुरुं भज ।	हितं शृणु ।	पत्रं लिख ।
शब्दं ब्रूहि ।	गेहं विश ।	वेदं पठ ।
दुग्धं पिब ।	देवं भज ।	व्रतं कुरु ।

द्वितीयः पाठः ॥ २ ॥

(शब्दाः)

शिरः	मुखं	दन्तः	ओष्ठः
हनुः	कण्ठः	ग्रीवा	घ्राणं
जिह्वा	श्रोत्रं	नेत्रं	शिखा
पक्ष्म	श्मश्रु	पृष्ठं	भुजः
पाणिः	वक्षः	कुक्षिः	कक्षः
नाभिः	कटिः	ऊरुः	जानुः
जंघा	पादः	पार्श्वः	नखः
शर्करा	गुडं	नारिकेलं	चोचं
चूतं	पनसं	इक्षुः	जम्बु
खर्जूरं	द्राक्षा	कपित्थं	जम्बीरं
दाडिमं	कूष्माण्डः	पटोलः	वृन्ताकं
तण्डुलाः	यावनालाः	माषाः	तिलाः
गोधूमाः	चणकाः	कुलत्थाः	सर्षपाः
लवणं	मरीचं	कुस्तुंबरु	जीरकः
ताम्बूलं	पूगीफलं	चूर्णं	खदिरः
लवंगं	एला	केशरं	कस्तूरी

(वाक्यानि)

नेत्राभ्यां पश्यामः । कर्णाभ्यां शृणुमः ।
 घ्राणेन जिघ्रामः । मुखेन भक्षयामः ।
 जिह्वाया रसं जानीमः । दन्तैश्चर्चामः ।
 हस्ताभ्यां कर्माणि कुर्मः । पद्भ्यां चरामः ।
 त्वचा स्पर्शं जानीमः । मुत्रेण वदामः ।

शर्करा मधुरा । मधु मधुरं ।
 इक्षुरपि मधुरं । दधि आम्लं ।
 लवणं क्षारं । मरीचं कटु ।
 कारवेष्टं तिक्तं । आमलकं कषायं ।
 सर्वारम्भास्तण्डुलाः प्रस्थमूलाः ।
 दधि मधुरं मधु मधुरं द्राक्षा मधुरा सिताऽपिमधुरैव
 मधुरादपि तन्मधुरं मधुरानाथस्य नाम यद्गीतम् ॥ १ ॥

तृतीयः पाठः ॥ ३ ॥

(शब्दाः)

अत्र	तत्र	यत्र	कुत्र
यदा	तदा	कदा	सदा
अतः	कुतः	यतः	ततः
इत्थम्	एवम्	कथम्	चिरम्

अथ	इति	यथा	तथा
अधुना	अद्य	ह्यस्	श्वस्
अपि	चेत्	ननु	अहो
यदि	तर्हि	यद्यपि	तथापि
वृथा	वा	पुनर	पुरा
इव	एव	किन्तु	सुष्टु
सायं	प्रातः	दिवा	नक्तम्
माता	पिता	भ्राता	भगिनी
भार्या	पुत्रः	पुत्री	पौत्री
पौत्रः	भर्ता	श्वश्रूः	श्वशुरः
स्नुषा	श्यालः	मातुलः	पितृव्यः
अहं	मम	त्वं	तव
सः	तस्य	अयम्	अस्य

(वाक्यानि)

मम माता । तस्य स्वसा । तव श्वश्रूः ।
 मम पिता । तस्य श्यालः । तव श्वशुरः ।
 मातुर्भ्राता मातुलः । पितुर्भ्राता पितृव्यः ।
 रामस्य भार्या जानकी । श्वशुरो जनकः ।
 कृष्णस्य भगिनी सुभद्रा ।

रामस्य माता कौसल्या ।
 कृष्णस्य पिता वसुदेवः ।
 दशरथस्य स्नुषा जानकी, कुशः पौत्रः ।
 अर्जुनस्य श्यालः कृष्णः, वसुदेवः श्वशुरः ।
 रामस्य भ्राता लक्ष्मणः तस्य माता सुमित्रा ।
 यतः सत्यं ततो धर्मः । यतो धर्मस्ततो धनम् ।
 यथा देशस्तथा भाषा । यथा बीजं तथांकुरः ।
 यथा भूमिस्तथा तोयम् । यथा चित्तं तथा वाचः ।
 यथा राजा तथा प्रजा । यथा वृक्षस्तथा फलम् ।
 वृथा दानं धनाढ्यस्य । वृथा वृष्टिः समुद्रेषु ।
 वृथा दीपो दिवापिच । वृथा तृप्तस्य भोजनम् ।

चतुर्थः पाठः ॥ ४ ॥

(शब्दाः)

शुक्ल	नील	पीत	रक्त
हरित	कपिल	चित्र	धवल
शुभ्र	हरिण	श्वेत	कृष्ण
धूसर	अरुण	लोहित	पाटल
धूमल	कपिश	शबल	पिशङ्ग

हंसः	बकः	काकः	कोकिलः
शुकः	सारिका	बर्ही	मयूरः
गरुडः	गृध्रः	शरभः	पतङ्गः
धेनुः	वृषः	अजा	एडकः
महिषी	महिषः	अश्वः	गजः
कपिः	मृगः	व्याघ्रः	सिंहः

(वाक्यानि)

तूलः शुक्लः (तूलस्य वर्णः शुभ्रः) ।
 रौप्यं शुक्लं, दुग्धं दधि तक्रं च शुक्लं ।
 हंसा बकाश्चापि शुक्लाः ।
 कज्जलं नीलं (कज्जलस्य वर्णः कृष्णः) ।
 काकः कृष्णः, पिकः कृष्णः, महिषी कृष्णा ।
 हेम पीतं (सुवर्णस्य वर्णः पीतः) ।
 हरिद्रा पीता, चंपकः पीतः ।
 रुधिरं रक्तं, कुंकुमं जपाकुसुमं च रक्तं ।
 वृक्षस्य पर्णानि हरितानि, दूर्वा हरिता ।
 शुकोऽपि हरितवर्णः । उष्ट्रः कपिलः ।
 बर्ही चित्रः । धूमो धूसरः । मेघः श्यामः ।

धवला कीर्तिः । अरुणः पाटलः ।

माणिक्यं लोहितं ।

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः
वसन्तकाले संप्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥ १ ॥

पंचमः पाठः ॥ ५ ॥

(शब्दाः)

पुष्पं	बुधः	ब्राह्मणः	आर्यः
बालः	मूर्खः	मार्जारः	दुर्गुणः
शिक्षकः	स्वर्गार्थिन्	गुणः	पूजा
ग्रामः	देशः	मित्रं	रूपं
रक्षति	धावति	पश्यति	ददाति
पृच्छति	पिबति	पठति	त्यजति
शोभन्ति	हसन्ति	वदन्ति	कुर्वन्ति

(वाक्यानि)

माता रक्षति । अश्वो धावति । बालः पश्यति ।
पुष्पाणि शोभन्ति । मूर्खा हसन्ति । शिक्षकः
पृच्छति । मार्जारो दुग्धं पिबति । ब्राह्मणो वे-
दान् पठति । बुधो दुर्गणं त्यजति । आर्याः सत्यं
वदन्ति । स्वर्गार्थिनः पुण्यं कुर्वन्ति ।
धर्मः सुखं ददाति । मूर्खः मित्रं त्यजति ।

विद्या ददाति विनयं सत्यमेव जयते
विद्या मित्रं प्रवासेषु सत्येन तपते रविः
विद्या रूपं कुरूपिणां सत्येन पूयते साक्षी
विद्या सर्वस्य भूषणं सत्येन वाति वायुश्च
विद्या स्तब्धस्य निष्फ- सत्येन धार्यते पृथ्वी
ला । यः क्रियावान् स सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्
पंडितः । हतं ज्ञानं सत्यपूतां वदेद्वाणीम्
क्रियाहीनम् । सत्यं कण्ठस्य भूषणम्
स्वगृहे पूज्यते मूर्खः स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ १ ॥
सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यज्ञानं तु दुष्करम्
यद्भूत हितमत्यन्तमेतत्सत्यं ब्रवीम्यहम् ॥ २ ॥

षष्ठः पाठः ॥ ६ ॥

(गृहं ग्रामः देशः पृथ्वी जगच्च ।)

यत्र वयं वसामः क्रीडामः भुञ्जमः स्वपिमश्च
तद्गृहम् । गृहस्य स्तंभाः स्थूणाश्च वर्तन्ते । तत्र
च भोजनगृहं, स्नानगृहं, देवगृहमित्यादीनि
अनेकानि उपगृहाणि आसते । सर्वेषां तेषां
समुच्चयस्य एकमभिधानं गृहं इति । यत्र

वयं अधीमहे तद् विद्यालयम् । यस्य मार्ग-
स्य पार्श्वयोः ईदृशानि बहूनि गृहाणि आल-
यानि वा सन्ति, सा वीथ्या इति अभि-
धीयते । बह्व्यः वीथ्यः राजगृहाणि मि-
लित्वा एको ग्रामो भवति । अतीव विस्तृतो
ग्रामः पुरी इत्याचक्ष्यते । ईदृशीनां नैक
पुरीणां समवायस्तु देशः । एवंच यस्याः
पृष्ठभागे अनेकाः देशाः नद्यः गिरयः समुद्रा
अपि वर्तन्ते सा पृथ्वी । इत्थं पृथ्व्याकाश
सूर्यचंद्रादि ग्रहनक्षत्राणां यः एकः समुदा-
यः तज्जगत् । इदं अखिलं जगत् परमेश्व-
रेणैव निर्मितम् । तस्मात् तस्य अस्मदुपरि
महानयं प्रसादः । ततः सर्वेषां अस्माकं स
पिता एव स्यात् । वयं तस्य बालकानि । त-
स्माद् यदि वयं बंधुत्वेन परस्परसहाय्यं
कुर्मः तर्हि एव स ईश्वरः अस्मान् अनु-
ग्रहिष्यति ।

सप्तमः पाठः ॥ ७ ॥

(आर्याणां निवासभूः)

यत्र वयं निवसामः तद्देशस्य प्राचीनं नाम
' भारतवर्ष ' ' भरतखण्ड ' वा । संप्रति
' हिंदुस्थान ' इति व्यवह्रीयते । एतस्यो-
दीच्यां हिमाचलो नाम जगत्प्रसिद्धो महान्
गिरिः । प्राच्यां ब्रह्मदेशः पूर्वसमुद्रश्च ।
दक्षिणस्यां सिंहलद्वीपं दक्षिणमहासागरश्च ।
प्रतीच्यामपि तथैव ' आरबी ' नामा समुद्रो
वर्तते । इदानीमस्य देशस्य ' कलिकाता '
नाम्नी राजधानी । तथाच मुंबापुरी (मुंबई,
बम्बई) मद्रपुरी (मद्रास) च द्वे वि-
शाले राजनगरौ स्तः । अधुना चैनं देशं
ईश्वरेच्छया आंग्लभूपाः शासति । एतत्पूर्वं
अत्र क्षत्रियाः पश्चात् कतिपय दिनानि
स्लैच्छाश्च राजान् आसन् । तदा बत सर्वत्र
धर्मग्लानिर्गोब्राह्मणपीडा च बभूव । तदा-
नीमेव ' शिवाजी ' नाम्ना श्रीशिवावतारः
प्रादुरभूत् । तेन महाराजेण नृशंसान् यव-
नान् जित्वा स्वराज्यं स्थापितं स्वधर्मो रक्षि-

तश्च । यदि स चावतारो नाऽभविष्यत् तर्हि
 ' ब्राह्मण्यं ' ' आर्यत्वं ' वा नास्थास्यत् ।
 तदानीमेव तन्नष्टं स्यात् । परं करुणासागरः
 प्रभुरेव स्वयमवतीर्य अस्मान् रक्षितवान् ।
 यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ॥
 अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ १ ॥
 भगवद्गीता.

अष्टमः पाठः ॥ ८ ॥

(स्वदेशविस्तारः ।)

भागीरथी, गोदा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा
 सिंधुः, कावेरी, भीमा, चंद्रभागा, कृष्णा,
 वेणा, तुंगभद्रा चेत्यादयः सरितः (नद्यः) ।
 एतानि पावनानि तीर्थानि । यतस्तासां स्नानतः
 पानतः स्मरणतो वा महापातकान्यपि नश्यन्ति ।

हिमाचलः विंध्यः सद्यः नीलगिरिः चं-
 द्रगिरिः श्रीशैलः इत्यादयः प्रसिद्धा गिरयः ।
 ' दूरतः पर्वता रम्याः ' । तदुपरि महांत-
 स्तरव आसते । गुहाश्च सिंह व्याघ्रादिभिः क्रूरैः
 पशुभिर्व्याप्ताः । कासुचित् गुहासु महात्मानः
 प्राचीना ऋषयस्तपस्यन्तीति किंवदंती श्रूयते ।

वाराणसी (काशी,) गया, प्रयागं,
 बद्री, अयोध्या, मथुरा, द्वारका, जगन्नाथं,
 पंढरपुरं, श्रीरंगं, शिवकांची, विष्णुकांची,
 व्यंकटगिरिः, श्रीमुष्णं, चिदंबरं, मायूरं,
 रामेश्वरं इत्यादीनि पावनानि क्षेत्राणि ।
 अत्र च प्राचीनानि महान्ति देवालयानि
 सन्ति । तत्र प्रतिसंवत्सरं नियत दिवसे
 उत्सवाश्च संभवन्ति । तदर्थं परस्था जना
 बहव आयान्ति । सैव ' यात्रा ' इत्यभिधीयते ।

नवमः पाठः ॥ ९ ॥

श्रीक्षेत्र पंढरपुरम् ।



समचरणसरोजं सांद्रनीलांबुदाभं
 जघननिहितपाणिं मंडनं मंडनानाम् ।
 तरुणतुलसिमालाकंधरं कंजनेत्रं
 सद्यधवलहासं विह्वलं चिंतयामि ॥

दक्षिण महाराष्ट्रदेशे 'पंढरी' (पंढरपुरं)
 नाम महाक्षेत्रं वर्तते । तत् 'भूवैकुण्ठं'
 इत्यपि उच्यते । तत्र आषाढे कार्तिके च
 मासि महती यात्रा मिलति । नवरात्रदी-
 पावल्यादिष्वपि महोत्सवा जायन्ते । अत्र-
 त्या देवता 'श्रीविठ्ठल' नाम्नी । जगदु-
 द्धारार्थं श्रीलक्ष्मीपते नवमोऽयमवतारः ।
 एतत्क्षेत्रं तु चंद्रभागानदीतीरस्थम् । कलौ
 'नामदेव' 'ज्ञानदेव' (ज्ञानेश्वर)
 'तुकाराम' प्रभृतयो दिगंतकीर्तयः साध-
 वः समजायन्त । ते भगवत एव विभू-
 तयः स्युः ।

आसीच्च पुरा मातापितृभक्तः पुंडलीका-
 मिधः कश्चित्पुरुषः । स सर्वमपि कालं पित्रोः
 सेवायामेव विनियोजयति स्म । पित्रोस्तस्य
 एतादृशीमव्यभिचारिणीं भक्तिं दृष्ट्वा भगवान्
 श्रीमहाविष्णु स्तस्मै वरं दातुं समागतः ।
 पुंडलीको मातापितृसेवानिरतत्वात् भगवतः
 न किमपि स्वागतं कृतवान् । किंतु समीप-
 स्थामेकां दृष्ट्वा तस्मै आसनार्थमिति क्षि-

सवान् । तदुपर्येव रुक्मिणीशः प्रेम्णा अति-
 ष्टत् । स अद्यावधि तथैव वर्तते । श्रीविठ्ठल
 देवालयस्य महाद्वारस्य पुरस्तात् पुंडलीक-
 स्यापि आलयं वर्तते । अस्य क्षेत्रस्य मा-
 हात्म्यवर्णनं सहस्रमुखेणापि कर्तुमशक्यम् ।
 धन्यः खलु असौ मृत्युलोकवासी नरो
 योऽस्य क्षेत्रस्य दर्शनं लब्ध्वा ततोद्भूतं
 सात्त्विकानंदमनुभवति ।

बालकैरात्मनो मातापित्रो गुरोश्च सदा
 एकनिष्ठतया सेवा कर्तव्या । नैव कदाचि-
 त्तेषामाज्ञाभंगो विधेयः । बालकैः कृता
 मातापितृसेवा गुरुशुश्रूषा वा, स्त्रीभिः स-
 गाचरिता पतिसेवा गोसेवा वा, सेवकैश्च
 कृता स्वामिसेवा वा परमेश्वरमेवोपतिष्ठते ।
 तदनुरोधाच्च असौ भगवान् संतुष्टः सन्न-
 खिल सौख्यदाता भवति ।

बालकेभ्यः

बोधाल्हादप्रदाः कथाः ।

कथा प्रथमा १.

गजजंबूकयोः ।

आस्तां कुत्रचिद्गजजंबूकौ । तत्र गजः स्थूलः
शृगालः कृशश्च । जंबूकोऽब्रवीत् ' भ्रातः गच्छाव-
तावत्पुंद्रेक्षुभक्षणार्थम् । चल । ' जंबूको गतः पुर-
स्तात् गजोऽतिष्ठत् पश्चात् । अनंतरं काचिन्नदी प्राप्ता ।
तस्यां पंकः आसीत् । जंबूक उड्डीय गतः ।
गजस्तु पंके निमग्नः । गजोऽवदत् ' बंधो मामुद्ध-
रस्व रे ' । जंबूक उवाच ' एहि मे पृष्ठतः ' इति ।
सच हस्ती शरीरस्थूलत्वाद्बहिर्गंतुं नाशक्नोत् । त-
त्रैव अनाहारेण मृतश्च । जंबूकश्च तं निजपरिवारेण
सह भक्षितवान् ।

तात्पर्यम्—नीचमैत्री जगत्यास्मिन् सद्यः प्राणापहारिणी ।

कथा द्वितीया २.

आखुशिशोः ।

कस्मिंश्चिद्गृहे बहवः आखवः आसन् । कदाचित्-
गृहपतिना तद्धननार्थं पंजरो निवेशितः । तत्र च
निहितमेकं पोलिकाशकलम् । केनचिदाखुशिशुना
तद्गृह्णा स्वमात्रे पृष्ठम् ' अंब पश्येदमत्र पोलिकाश-
कलम् । किंतदस्मि ? ' इति । माता अवदत् ' मा मा ।
त्वं तत्र निबद्धो भविष्यसि ' इति । स तु निजमा-
तुरिदं वचः असत्यं मत्वा तया अदृष्टः सन् पो-

लिकास्वादनार्थं तत्र गत एव । किंतु तन्मध्ये
निबद्धो मृतश्च ।

तात्पर्यम्—स दुःखभागभवेद्यो वै पित्रोर्वाक्यं न
मानयेत् ।

कथा तृतीया ३.

शशकच्छपयोः ।

आसीदेकः शशः एकश्च कच्छपः । उभौ तौ
एकदा नगरांतरार्थं प्रस्थितौ । शशोऽवदत् ' त्वत्तः
पूर्वमेव अहं तत्र प्राप्स्यामि ' । कच्छपो बभाषे
' अहमेव ' इति । शशस्य गमनं शीघ्रगत्या, कच्छ-
पस्य तु मंदमेव । यावच्छशो दूरं गत्वा पृष्ठभागे
पश्यति, तावत्कूर्मः अतीव पश्चात् वर्तते । ततः
' आः निद्रासुखमनुभवामि किञ्चित्, यावत्स
अत्रागमिष्यति ' इत्युक्त्वा स तत्रैव गाढं सुष्वाप ।
मंथरगतिः कूर्मस्तु पश्चादागत्य तूर्णमेव संकेत-
स्थानं प्राप्तः ।

तात्पर्यम्—शनैः कार्यकरस्यैव कृतोद्योगः समाप्यते ।

कथा चतुर्थी ४.

मित्रद्वयस्य ।

उभौ आस्तां सुहृदौ । ताभ्यामेकदा अटव्यट-
नसमये कश्चित् ऋक्षो दृष्टः । तयोरेकतमः वृक्ष-
मारुह्य प्रच्छन्नो बभूव । अपरस्तु अचेतनत्वमप-

दिशन् भूमावेव तूष्णीमशेत । ऋक्ष स्तत्समीप-
मागतवान् । किंतु मृतोऽयमिति मत्वा स तच्छ-
रीरं सर्वत आघ्रायैव निवृत्तः । तदुपरि वृक्षस्थः
सुहृद् अधोऽवतीर्य तं पृष्ठवान् ' सखे किं कथितं
कर्णे ऋक्षेण ' इति । सोऽप्यवदत् ' केवलं त्वा
दृशैर्वचकैः सह संगतिं न कार्या इत्येव ' इति ।

तात्पर्य—परीक्ष्य संगतिः कार्या सदैव भूतिमिच्छता ।

कथा पंचमी ५.

शूद्रीनकुलयोः ।

अस्ति स्म काचिच्छूद्री तंतुपुर्याम् । तया च
एको नकुलः स्वापत्यनिर्विशेषं संवर्तितः आसीत् ।
कदाचिन्निजबालकमांदोले शाययित्वा निधाय च
तत्समीपे तं नकुलं सा उदकानयनार्थं बहिर्गता ।
अत्रांतरे तत्र कश्चित्सर्प आगतः । स च यावत्तं बालकं
दृष्टुमुद्यतो भवति तावत्समीपस्थेन नकुलेनैषः
खंडशः कृत्वा व्यापादितः । किंतु प्रतिनिवृत्ता सा
शूद्री तस्य मुखं रुधिराभिषिक्तं दृष्ट्वा मम बालक-
मेवानेन व्यापादितं स्यादिति मत्वा सक्रोधं तस्यो-
परि जलकुंभाधिक्षेपं कृत्वा निरपराधिनं तं नष्ट
जीवितं चकार । ज्ञाते त्वखिलवृत्तेसा स्वाविवेकार्थं
पश्चात्तापं भेजे ।

तात्पर्यम्—सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः
परमापदां पदम् ।

कथा षष्ठी ६.

सिंहवृषमाणाम् ।

कस्मिंश्चिदरण्ये एकः सिंहश्चत्वारो वृषभा-
श्चासन् । सिंहस्तु सर्वदा तान्व्यापादयितुं ऐच्छत् ।
ते तु परस्परविहाय न कदापि स्वैराचरणं कुर्वन्ति ।
ततः सिंहः एकदा तेषु एकतमं वृषभं रहस्युवाच ।
' भो मित्र स उन्नतशृंगो वृषभः किमिति त्वां
नित्यं शपाति त्वत्परोक्षम् । हन्तुमपि इच्छति त्वाम् '
इति । सिंहस्येदं वचः सत्यमिति मत्वा तदारभ्य
स वृषभः स्वेषां मध्ये आगत्वा पृथगेव वसतिं कु-
र्वाण आसीत् । अनया रीत्या स सिंहः सर्वेष्वपि
वृषभेषु परस्परवैरमुत्पादयित्वा तान् एकैकशः
व्यापादितवान् ।

तात्पर्यम्—संहति श्रेयसी पुंसाम् ।

बोधपद वाक्यानि ।

गुरुणां सान्निध्यं तिष्ठेत् सदैव विनयान्वितः ।
कृतेच प्रतिकर्तव्य मेष धर्मः सनातनः ।
क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।
यद्यदात्मनि चेच्छेत्तु तत्परस्यापि चिंतयेत् ।
प्रियं तथ्यं च पथ्यं च बदेद्धर्मार्थकं वचः ।
विद्वान् सर्वेषु भूतेषु ह्यात्मना सोपमो भवेत् ।
सज्जनैः संगतं कुर्यात् धर्माय च सुखाय च ।
शुष्कवैरं विवादं च न कुर्यात् केनचित्सह ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।
स्वजनैर्न विरुद्ध्येत न स्पर्धेत बलीयसा ।
सा श्री र्या न मदं कुर्यात् स सुखी तृष्णयोज्झितः ।
स सुहृद् व्यसने यः स्यात् स पुत्रो यस्तु भक्तिमान् ।

विभक्तिनिदर्शनम् ।

रामो हरिः करी भूभृद्भानुः कर्ता च चन्द्रमाः ॥
तस्थिवान् भगवानात्मा दशैते पुंसि नायकाः ॥ १ ॥

अकारान्तः पुंलिङ्गो 'राम' शब्दः ।

एकवचनम् । द्विवचनम् । बहुवचनम् ।

१ रामः	रामौ	रामाः	(प्रथमा)
२ रामम्	रामौ	रामान्	(द्वितीया)
३ रामेण	रामाभ्याम्	रामैः	(तृतीया)
४ रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः	(चतुर्थी)
५ रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः	(पंचमी)
६ रामस्य	रामयोः	रामाणाम्	(षष्ठी)
७ रामे	रामयोः	रामेषु	(सप्तमी)
८ राम	रामौ	रामाः	(संबोधनं)

एवं देवकृष्णमुकुन्दादायोऽकारान्त पुंलिङ्गाः ।

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ॥
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहम् ।
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥ १ ॥

यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य ॥
तल्लिङ्गं तद्वचनं सा च विभक्तिर्विशेषणस्यापि ॥ १ ॥

संख्यालक्षणानि ।

(आर्यावृत्तं)

एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः ॥
अर्बुदमब्जखर्वनिखर्वमहापद्मशंकवस्तस्मात् ॥ १ ॥
जलधिचांत्यं मध्यं परार्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः ॥
संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैः ॥ २ ॥

स्थानानि.

१ एकं	१
२ दशं	१०
३ शतं	१००
४ सहस्रं	१०००
५ अयुतं (दशसहस्रं)	१००००
६ लक्षं	१०००००
७ प्रयुतं (दशलक्षं)	१००००००
८ कोटिः	१०००००००
९ अर्बुदं (दशकोटिः)	१००००००००
१० अब्जं	१०००००००००
११ खर्वं	१००००००००००
१२ निखर्वं	१०००००००००००
१३ महापद्मं	१००००००००००००
१४ शंकुः	१०००००००००००००
१५ जलधिः	१००००००००००००००
१६ अंत्यं	१०००००००००००००००
१७ मध्यं	१००००००००००००००००
१८ परार्धं	१०००००००००००००००००

संख्यावाचक शब्दाः

पुलिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे
१ एकः	एका	एकम्
२ द्वौ	द्वे	द्वे
३ त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
४ चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
५ पञ्च	२४ चतुर्विंशतिः	४३ त्रिचत्वारिंशत्.
६ षट्	२५ पञ्चविंशतिः	४४ चतुश्चत्वारिंशत्
७ सप्त	२६ षड्विंशतिः	४५ पञ्चचत्वारिंशत्
८ अष्ट	२७ सप्तविंशतिः	४६ षट्चत्वारिंशत्
९ नव	२८ अष्टाविंशतिः	४७ सप्तचत्वारिंशत्
१० दश	२९ एकोनविंशतिः	४८ अष्टचत्वारिंश.
११ एकादश	३० त्रिंशत्	४९ एकोनपञ्चाशत्
१२ द्वादश	३१ एकत्रिंशत्	५० पञ्चाशत्
१३ त्रयोदश	३२ द्वात्रिंशत्	५१ एकपञ्चाशत्
१४ चतुर्दश	३३ त्रयस्त्रिंशत्	५२ द्विपञ्चाशत्
१५ पञ्चदश	३४ चतुस्त्रिंशत्	५३ त्रिपञ्चाशत्
१६ षोडश	३५ पञ्चत्रिंशत्	५४ चतुःपञ्चाशत्
१७ सप्तदश	३६ षट्त्रिंशत्	५५ पञ्चपञ्चाशत्
१८ अष्टादश	३७ सप्तत्रिंशत्	५६ षट्पञ्चाशत्
१९ एकोनविंशतिः	३८ अष्टत्रिंशत्	५७ सप्तपञ्चाशत्
२० विंशतिः	३९ एकोनचत्वारिं.	५८ अष्टपञ्चाशत्
२१ एकविंशतिः	४० चत्वारिंशत्	५९ एकोनषष्टिः
२२ द्वाविंशतिः	४१ एकचत्वारिंश.	६० षष्टिः
२३ त्रयोविंशतिः	४२ द्विचत्वारिंशत्	६१ एकषष्टिः

६२ द्विषष्टिः	७६ षट्सप्ततिः	९० नवतिः
६३ त्रिषष्टिः	७७ सप्तसप्ततिः	९१ एकनवतिः
६४ चतुष्षष्टिः	७८ अष्टसप्ततिः	९२ द्विनवतिः
६५ पञ्चषष्टिः	७९ एकोनाशीतिः	९३ त्रिनवतिः
६६ षट्षष्टिः	८० अशीतिः	९४ चतुर्णवतिः
६७ सप्तषष्टिः	८१ एकाशीतिः	९५ पञ्चनवतिः
६८ अष्टषष्टिः	८२ द्व्यशीतिः	९६ षण्णवतिः
६९ एकोनसप्ततिः	८३ त्र्यशीतिः	९७ सप्तनवतिः
७० सप्ततिः	८४ चतुरशीतिः	९८ अष्टनवतिः
७१ एकसप्ततिः	८५ पञ्चाशीतिः	९९ एकोनशतम्
७२ द्विसप्ततिः	८६ षडशीतिः	१०० शतम्
७३ त्रिसप्ततिः	८७ सप्ताशीतिः	१०१ एकोत्तरशतं
७४ चतुःसप्ततिः	८८ अष्टाशीतिः	१०८ अष्टोत्तरशतं.
७५ पञ्चसप्ततिः	८९ एकोननवतिः	इत्यादि.

कल्यब्दाः ४९९८

शालिवाहन शकाब्दाः १८१९

विक्रमसंवत् १९५३/५४

हूणवत्सरः १८९७/९८

अंकानां वामतो गतिः ।

१७७६३९ = नवत्रिंशदधिकषट्शताधिकसप्तसप्तति-

सहस्राधिकलक्षम् ।

७५४ = चतुःपञ्चाशदधिकसप्तशतम् ।

८३० = त्रिंशदधिकाष्टशतम् ।

१८१९=एकोनविंशदधिकाष्टशताधिकसहस्रम्।

१८२८=अष्टनवत्यधिकाष्टशताधिकसहस्रम्।

(क्रमवाचकाः)

पु०	स्त्री०	नपुं०
(१) प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
(२) द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
(३) तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
(४) { चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
{ तुरीयः	तुरीया	तुरीयम्
(५) पंचमः	पंचमी	पंचमम्
(६) षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
(७) सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
(८) अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
(९) नवमः	नवमी	नवमम्
(१०) दशमः	दशमी	दशमम्

(१५) पंचदश	(५०) पंचाशत्तम
(२०) विंशतितम	(६०) षष्टितम
(२५) पंचविंशतितम	(७०) सप्ततितम
(३०) त्रिंशत्तम	(८०) अशीतितम
(३५) पंचत्रिंशत्तम	(९०) नवतितम
(४०) चत्वारिंशत्तम	(१००) शततम
(४५) पंचचत्वारिंशत्तम	(१०००) सहस्रतम

अथ निलोपयुक्त संग्रहः ।

६० संवत्सर नामानि.

प्रभवो विभवः शुक्रः प्रमोदोथ प्रजापतिः ॥ अंगिराः
श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैवच ॥ १ ॥ ईश्वरो बहु-
धान्यश्च प्रमाथो विक्रमो वृषः ॥ चित्रभानुः सुभानुश्च
तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ २ ॥ सर्वजित् सर्वधारी च
विरोधी विकृतिः खरः ॥ नन्दनो विजयश्चैव जयो
मन्मथदुर्मखौ ॥ ३ ॥ हेमलंबो विलंबो च विकारी शा-
वरी प्लवः ॥ शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वासु पराभवौ
॥ ४ ॥ प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारण विरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादी च आनंदो राक्षसो नलः ॥ ५ ॥
पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ॥ दुंदुभी
रुधिराद्वारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ६ ॥

१ प्रभव, २ विभव, ३ शुक्र, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति
६ अंगिरा, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युव, १० धात, ११ ईश्वर
१२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृष, १६ चित्र-
भानु, १७ सुभान, १८ तारण, १९ पार्थिव, २० व्यय, २१
सर्वजित्, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी, २४ विकृति, २५ खर,
२६ नन्दन, २७ विजय, २८ जय, २९ मन्मथ, ३० दुर्मख,
३१ हेमलंब, ३२ विलंब, ३३ विकारी, ३४ शावरी, ३५ प्लव,
३६ शुभकृत्, ३७ शोभन, ३८ क्रोधी, ३९ विश्वासु, ४० प-
राभव, ४१ प्लवंग, ४२ कीलक, ४३ सौम्य, ४४ साधारण,
४५ विरोधकृत्, ४६ परिधावी, ४७ प्रमादी, ४८ आनंद, ४९
राक्षस, ५० नल, ५१ पिंगल, ५२ कालयुक्त, ५३ सिद्धार्थ,
५४ रौद्र, ५५ दुर्मति, ५६ दुंदुभी, ५७ रुधिराद्वारी, ५८
रक्ताक्षी, ५९ क्रोधन, ६० क्षय.

अयने द्वे २.

१ उदगयनं (उत्तरायणम्) २ दक्षिणायन

मासा द्वादश (१२).—१ चैत्र, २ वैशा.
३ ज्येष्ठ, ४ आषाढ, ५ श्रावण, ६ भाद्रपद,
आश्विन, ८ कार्तिक, ९ मार्गशीर्ष, १० पौष,
माघ, १२ फाल्गुन.

ऋतवः षट् (६).—१ वसंत, २ ग्रीष्म, ३
४ शरद्, ५ हेमंत, ६ शिशिर.

१ चैत्रवैशाखौ वसंतऋतुः । २ ज्येष्ठाषाढौ ग्रीष्म
ऋतुः । ३ श्रावणभाद्रपदौ वर्षाऋतुः । ४ आश्वि
कार्तिकौ शरद्ऋतुः । ५ मार्गशीर्षपौषौ हेमंतऋतुः
६ माघफाल्गुनौ शिशिरऋतुः ।

पक्षौ द्वौ—शुक्लकृष्णौ. प्रतिपत्पौर्णिमान्तः
पक्षः । तदनंतरं अमावास्यान्तः कृष्णपक्षः ।

तिथयस्त्रिंशत् (३०)

१ प्रतिपत्, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चतु
५ पंचमी, ६ षष्ठी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी, ९ नव
१० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयो
दशी १४ चतुर्दशी, १५ पौर्णिमा, १-३० अमावास्या

वाराः सप्त (७).

१ आदित्य (रविः) २ सोम (इन्दुः) ३

ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಂಖ್ಯೆ P2795

